



PAREEKSHA BAAZ
Institute for CSE Examination

PRELIM POINTERS

25th NOV 2024

For more exam related
videos and guidance,
scan the code to
join our YouTube Channel



For more exam related
material, scan the
code to join our
Telegram Channel



Scan the code
to join our
Instagram Channel





INDEX

SN.	TOPIC
1	आपके दरवाजे पर नौकरियां रिपोर्ट
2	परियोजना वीर गाथा
3	पोबितोरा वन्यजीव अभयारण्य
4	मिन्के व्हेल
5	डल झील
6	पूर्वी इम्पीरियल ईगल क्या है?
7	नैफिथ्रोमाइसिन
8	संपीडित बायोगैस
9	चागास रोग क्या है?
10	दिबांग बहुउद्देशीय परियोजना



आपके दरवाजे पर नौकरियां रिपोर्ट



अवलोकन:

हाल ही में, केंद्रीय शिक्षा मंत्री ने श्रम एवं रोजगार तथा युवा मामलों के मंत्री के साथ मिलकर नई दिल्ली में आयोजित एक कार्यक्रम में विश्व बैंक की एक रिपोर्ट 'नौकरियां आपके द्वार पर: छह राज्यों में युवाओं के लिए नौकरियों का निदान' को लॉन्च किया।

जॉब्स एट योर डोरस्टेप रिपोर्ट के बारे में:

- यह रिपोर्ट भारत में शिक्षा और रोजगार एजेंडे के बीच रणनीतिक संबंध और अभिसरण प्रदान करने के लिए निदान और रोडमैप दोनों के रूप में कार्य करती है।
- यह रिपोर्ट छह राज्यों - हिमाचल प्रदेश, केरल, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, ओडिशा और राजस्थान - के रोजगार परिदृश्य पर गहनता से विचार करती है तथा उन प्रमुख प्राथमिकता वाले क्षेत्रों और भूमिकाओं की पहचान करती है, जो माध्यमिक विद्यालय से स्नातक होने वाले युवाओं के लिए रोजगार की सर्वाधिक संभावनाएं प्रदान करते हैं।
- यह रिपोर्ट एक कौशल अंतराल विश्लेषण है, जो स्कूलों में पेश किए जाने वाले व्यवसायों को उन जिलों की उद्योग-विशिष्ट आवश्यकताओं के साथ संरेखित करने का प्रयास करता है जहां ये स्कूल मौजूद हैं।
- इसमें कक्षा 9 से 12 तक कौशल आधारित शिक्षा को शामिल करने के महत्वपूर्ण लाभों पर जोर दिया गया है, जिससे विद्यार्थियों को नीचे से ऊपर तक के दृष्टिकोण पर निर्भर करते हुए विविध कैरियर पथों के लिए तैयार किया जा सके।
- यह अध्ययन छह स्टार्स राज्यों में गहन प्राथमिक और माध्यमिक अनुसंधान के माध्यम से कौशल शिक्षा की पेशकश की पुनःकल्पना करने के लिए शुरू किया गया था।
- **स्टार्स योजना क्या है?**
 - यह 2021 में पांच वर्षों की अवधि के लिए प्रभावी हुआ। वित्त वर्ष 2024-25 तक।
 - स्टार्स परियोजना विश्व बैंक की वित्तीय सहायता से शिक्षा मंत्रालय के स्कूल शिक्षा एवं साक्षरता विभाग के अंतर्गत क्रियान्वित की जाएगी।



- इसे छह चिन्हित राज्यों हिमाचल प्रदेश, महाराष्ट्र, ओडिशा, राजस्थान, मध्य प्रदेश और केरल में लागू किया जा रहा है। इन राज्यों को शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए विभिन्न हस्तक्षेपों के लिए सहायता दी जाएगी।
- इसे **समग्र शिक्षा से अलग करके बनाया गया है**, तथा इसमें योजना के उन तत्वों पर ध्यान केंद्रित किया गया है जो स्कूली शिक्षा के संवर्धन में सबसे अधिक प्रत्यक्ष रूप से सहायता करेंगे।

प्रश्न 1: विश्व बैंक क्या है?

विश्व बैंक एक अंतरराष्ट्रीय वित्तीय संस्था है जो पूंजी परियोजनाओं को आगे बढ़ाने के उद्देश्य से निम्न और मध्यम आय/विकासशील देशों की सरकारों को ऋण और अनुदान प्रदान करती है। इसकी स्थापना 1944 के ब्रेटन वुड्स सम्मेलन में आईएमएफ के साथ की गई थी।





परियोजना वीर गाथा



अवलोकन:

सभी 36 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के 1.76 करोड़ से अधिक स्कूली छात्रों ने प्रोजेक्ट वीर गाथा 4.0 में उत्साहपूर्वक भाग लिया है।

प्रोजेक्ट वीर गाथा के बारे में:

- इसकी स्थापना 2021 में वीरता पुरस्कार विजेताओं की वीरता, निस्वार्थ बलिदान और साहस की प्रेरक कहानियों और इन बहादुर दिलों की जीवन कहानियों को छात्रों के बीच प्रसारित करने और उनमें देशभक्ति की भावना पैदा करने के उद्देश्य से की गई थी।
- प्रोजेक्ट वीर गाथा ने स्कूली विद्यार्थियों को वीरता पुरस्कार विजेताओं के वीरतापूर्ण कार्यों और बलिदान पर आधारित रचनात्मक परियोजनाएं/गतिविधियां करने के लिए एक मंच प्रदान करके इस महान उद्देश्य को आगे बढ़ाया।
- वीर गाथा परियोजना के तीन संस्करण क्रमशः 2021, 2022 और 2023 में आयोजित किए गए हैं।
- यह रक्षा मंत्रालय और शिक्षा मंत्रालय की संयुक्त पहल है।

वीरता पुरस्कारों के बारे में मुख्य तथ्य

- सशस्त्र बलों, अन्य विधिपूर्वक गठित बलों और नागरिकों के अधिकारियों/कार्मिकों की बहादुरी और बलिदान के सम्मान के लिए भारत सरकार द्वारा वीरता पुरस्कारों की स्थापना की गई है।
- इनकी घोषणा वर्ष में दो बार की जाती है - पहले गणतंत्र दिवस के अवसर पर और फिर स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर।
- ये पुरस्कार हैं अशोक चक्र, कीर्ति चक्र और शौर्य चक्र।
- इन पुरस्कारों का वरीयता क्रम इस प्रकार है: परमवीर चक्र, अशोक चक्र, महावीर चक्र, कीर्ति चक्र, वीर चक्र और शौर्य चक्र



प्रश्न 1: परमवीर चक्र क्या है?

यह भारत का सर्वोच्च सैन्य सम्मान है जो दुश्मन की मौजूदगी में सर्वोच्च वीरता या आत्म-बलिदान के लिए दिया जाता है। परमवीर चक्र की शुरुआत 26 जनवरी, 1950 को पहले गणतंत्र दिवस पर की गई थी और यह 15 अगस्त 1947 से प्रभावी हुआ।





पोबितोरा वन्यजीव अभयारण्य



अवलोकन:

शीत ऋतु के आगमन के साथ ही पोबितोरा वन्यजीव अभयारण्य में प्रवासी पक्षियों के आगमन में वृद्धि देखी जा रही है।

पोबितोरा वन्यजीव अभयारण्य के बारे में:

- **स्थान** : यह असम में गुवाहाटी के निकट मोरीगांव जिले में **ब्रह्मपुत्र नदी** के दक्षिणी तट पर स्थित है ।
- इसे 1971 में आरक्षित वन तथा 1987 में वन्यजीव अभयारण्य घोषित किया गया।
- यह **भारतीय एक सींग वाले गैंडे** की प्रजाति के सबसे अधिक जनसंख्या घनत्व का घर है (38.8 वर्ग किमी क्षेत्र में लगभग 102 गैंडे)।
- **भूदृश्य** : इसमें जलोढ़ निचली भूमि और दलदली भूमि का प्रभुत्व है ।
- ब्रह्मपुत्र नदी अभयारण्य के परिसर को उत्तर में एक प्राकृतिक सीमा प्रदान करती है , जबकि गरंगा बील इसके दक्षिण में एक प्राकृतिक सीमा प्रदान करती है ।
- **वनस्पति** :
 - पाबितोरा के 72% में अरुंडो डोनैक्स, एरियनथस रेवेना, फ्रगमाइट्स कर्का, इम्पेराटा सिलिंड्रिका और सैकरम एसपीपी के गीले सवाना शामिल हैं।
 - **जलकुंभी (ईकोर्निया क्रैसिपेस)** एक बड़ी समस्या है , विशेष रूप से जलपक्षियों के लिए, क्योंकि यह पानी की सतह पर मोटी परत बना देती है।
- **जीव-जंतु** :
 - गैंडे के अलावा अन्य जानवर हैं **तेंदुआ, जंगली सूअर, भौंकने वाला हिरण, जंगली भैंसा** आदि।
 - यह 375 से अधिक **स्थानीय और प्रवासी पक्षियों** की प्रजातियों का भी घर है , जैसे **भारतीय चितकबरा हॉर्नबिल, ऑस्ट्रे, पहाड़ी मैना, कालीज तीतर** आदि।

प्रश्न 1 : ब्रह्मपुत्र नदी की प्रमुख सहायक नदियाँ कौन सी हैं?

सहायक नदियाँ अर्थात् सुबनसिरी, रोंगनाडी, डिक्लोंग, बुरोई, बोरगोंग, जियाभराली, धनसिरी (उत्तर) पुथिमारी, मानस, बेकी, ऐ, सोनकोश उत्तर में मुख्य सहायक नदियाँ हैं जबकि नोआदेहिंग, बुरीदेहिंग, देसांग, दिखोव, भोगदोई, धनसिरी (दक्षिण) , कोपिल्ली, कुलसी, कृष्णाई, धधनोई, जिनजिरन प्रमुख हैं ब्रह्मपुत्र नदी के दक्षिणी तट पर सहायक नदियाँ।



मिन्के व्हेल



अवलोकन:

एक नए अध्ययन के अनुसार, पहली बार वैज्ञानिकों ने सीधे तौर पर मिन्के व्हेल की श्रवण क्षमता को मापा है, तथा पाया है कि यह प्रजाति 90 किलोहर्ट्ज (kHz) तक की उच्च आवृत्ति की ध्वनि को पहचान सकती है।

मिन्के व्हेल के बारे में:

- वे बैलीन या "महान" व्हेल परिवार के सदस्य हैं और रॉकवॉल्स में सबसे छोटे हैं।
- आंशिक रूप से ओवरलैपिंग रेंज वाली मिन्के व्हेल की दो मान्यता प्राप्त प्रजातियां हैं
 - सामान्य मिनक व्हेल (बालानोपेट्रा एक्वूटोरोस्ट्रेटा), और अंटार्कटिक मिनक व्हेल (बी. बोनेरेंसिस)।
 - बौना मिनक व्हेल सामान्य मिनक व्हेल की एक अनाम उप-प्रजाति है जो लगभग विशेष रूप से दक्षिणी गोलार्ध में पाई जाती है।
 - इसके अलावा उत्तरी अटलांटिक और उत्तरी प्रशांत क्षेत्र की आम मिनक व्हेल को भी अलग-अलग उप-प्रजातियों का नाम दिया गया है (उत्तरी अटलांटिक क्षेत्र में बी. ए. एक्वूटोरोस्ट्रेटा और उत्तरी प्रशांत क्षेत्र में बी. ए. स्कैमोनी)।
- वितरण: मिनक व्हेल लगभग 65°S से 80°N तक अधिकांश उष्णकटिबंधीय, समशीतोष्ण और ध्रुवीय क्षेत्रों में व्यापक रूप से वितरित हैं।
- सामान्य मिनक व्हेल सभी महासागरीय बेसिनों में पाई जाती हैं, जबकि बौनी मिनक व्हेल उप-प्रजातियां कमोबेश दक्षिणी गोलार्ध तक ही सीमित हैं।
- वे अधिकतर उच्च अक्षांशों पर ठंडे पानी में भोजन करते हैं तथा तटीय/अंतर्जलीय तथा महासागरीय/अपतटीय दोनों क्षेत्रों में पाए जा सकते हैं।
- IUCN संरक्षण स्थिति
 - आम मिनक व्हेल : कम से कम चिंता
 - अंटार्कटिक मिनक व्हेल : डेटा अपर्याप्त



प्रश्न 1: अंतर्राष्ट्रीय व्हेलिंग आयोग क्या है?

इसकी स्थापना व्हेलिंग के विनियमन के लिए अंतर्राष्ट्रीय कन्वेंशन (ICRW) के तहत की गई थी, जिस पर 1946 में वाशिंगटन डीसी में हस्ताक्षर किए गए थे। इसका उद्देश्य व्हेल स्टॉक के उचित संरक्षण के लिए प्रावधान करना है और इस प्रकार व्हेलिंग उद्योग के व्यवस्थित विकास को संभव बनाना है।





डल झील



अवलोकन:

हाल ही में सेना द्वारा जम्मू-कश्मीर की डल झील में प्रसिद्ध चिनार बोट रेस 2024 का आयोजन किया गया।

डल झील के बारे में:

- यह जम्मू और कश्मीर के श्रीनगर में स्थित एक छोटी मध्य-ऊंचाई वाली झील है।
- यह पीर पंजाल पहाड़ियों से घिरा हुआ है।
- इसे "कश्मीर के मुकुट का रत्न" या "श्रीनगर का रत्न" नाम दिया गया है।
- यह जम्मू और कश्मीर की दूसरी सबसे बड़ी झील है।
- यह झील 18 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैली हुई है तथा यह प्राकृतिक आद्रभूमि का हिस्सा है, जिसका क्षेत्रफल 21.1 वर्ग किलोमीटर है।
 - आद्रभूमि को पुलों द्वारा चार घाटियों में विभाजित किया गया है: गगरीबल, लोकुट दल, बोड दल और नागिन (हालांकि नागिन को एक स्वतंत्र झील भी माना जाता है)।
- झील की तटरेखा लगभग 15.5 किलोमीटर (9.6 मील) लंबी है, जो मुगलकालीन उद्यानों, पार्कों, हाउसबोटों और होटलों से युक्त एक मुख्य मार्ग से घिरी हुई है।
- कश्मीरी में "राड़" के नाम से प्रसिद्ध यह तैरता हुआ उद्यान जुलाई और अगस्त के दौरान कमल के फूलों से खिल उठता है।
- डल झील तैरते बाजार के लिए भी लोकप्रिय है, जहां विक्रेता अपने शिकारे/लकड़ी की नावें लेकर पर्यटकों से संपर्क करते हैं।
- पानी की गहराई सबसे गहरे स्थान पर 6 मीटर से लेकर सबसे उथले स्थान पर 2.5 मीटर तक होती है।
- सर्दियों के मौसम में, तापमान कभी-कभी -11°C (12°F) तक पहुँच जाता है, जिससे झील जम जाती है।



• द्वीप :

- डल झील में तीन द्वीप शामिल हैं, जिनमें से दो पर खूबसूरत चिनार के पेड़ हैं।
- लाकुट डल पर स्थित यह द्वीप **रोफ लंक (सिल्वर आइलैंड) के नाम से जाना जाता है, तथा** इसके चारों कोनों पर भव्य चिनार के वृक्ष मौजूद हैं, इसलिए इसे चार-चिनारी (चार चिनार) के नाम से भी जाना जाता है।
- दूसरा **चिनार द्वीप, जिसे सोन लंक (स्वर्ण द्वीप) के नाम से जाना जाता है**, बोड डल (बड़ी डल) पर स्थित है और हजरतबल के पवित्र मंदिर के सामने स्थित है।

प्रश्न 1 : पीर पंजाल रेंज क्या है?

यह आंतरिक हिमालय क्षेत्र में पहाड़ों का एक समूह है। यह पूर्व-दक्षिण-पूर्व (ESE) से पश्चिम-उत्तर-पश्चिम (WNW) तक भारतीय राज्य हिमाचल प्रदेश और जम्मू कश्मीर में फैला हुआ है।





पूर्वी इम्पीरियल ईगल क्या है?



अवलोकन:

हाल ही में केरल के कोले के खेतों में एक दुर्लभ शाही चील देखी गई, जिसे वैज्ञानिक रूप से एकिला हेलियाका के नाम से जाना जाता है।

ईस्टर्न इम्पीरियल ईगल के बारे में:

- यह एक बड़ा, सुंदर शिकारी पक्षी है जो दक्षिण-पूर्वी यूरोप तथा पश्चिम और मध्य एशिया में बड़े पैमाने पर प्रजनन करता है।
- वैज्ञानिक नाम: एकिला हेलियाका
- सभी ईगल्स की तरह, ईस्टर्न इम्पीरियल ईगल भी परिवार एक्सीपीट्रिडे का सदस्य है। इसके अलावा, इसके सुंदर पंख वाले पैर इसे उपपरिवार एकिलिना के सदस्य के रूप में चिह्नित करते हैं।
- यह जंगलों में रहना पसंद करता है, जहां यह एकांत ऊंचे पेड़ पर विशाल, विशिष्ट घोंसला बनाता है।
- अधिकांश आबादी प्रवासी है और पूर्वोत्तर अफ्रीका, मध्य पूर्व, तथा दक्षिण और पूर्वी एशिया में शीतकाल बिताती है।
- आवास: पुराने जंगल, तथा पहाड़ों, पहाड़ियों और नदियों के किनारे के जंगल सभी सामान्य आवास हैं।
- विशेषताएँ:
 - यह एक बड़ा बाज है। वयस्क की कुल लंबाई 68 से 90 सेमी तक हो सकती है और पंखों का फैलाव 1.76 से 2.2 मीटर तक होता है।
 - यह प्रजाति अधिकांश शिकारी पक्षियों की तरह विपरीत लैंगिक द्विरूपता प्रदर्शित करती है, जिसमें नर आमतौर पर मादाओं से छोटे होते हैं।
 - उनके सिर का मुकुट और गर्दन का पिछला हिस्सा हल्का सुनहरा होता है और पूंछ तक फैला हुआ भूरा रंग होता है। उनके स्कैपुलर पर बहुत स्पष्ट सफ़ेद "ब्रेसेज़" भी होते हैं।



- अन्य चीलों की तरह, उनके **पैर और पंजे भी मजबूत होते हैं**। उनके पैरों में लंबे, घुमावदार पंजे होते हैं जिनका उपयोग वे अपने शिकार को पकड़ने, मारने और ले जाने के लिए करते हैं।
- उनकी **बड़ी आंखें** भी होती हैं जो सिर के किनारे थोड़ी सी स्थित होती हैं। ये आंखें उन्हें बेहद **तेज़ दृष्टि प्रदान करती हैं**, जिससे वे हवा में उँचे स्थान से भी शिकार को देख सकते हैं।
- **आईयूसीएन रेड लिस्ट: असुरक्षित**

प्रश्न 1 : लैंगिक द्विरूपता क्या है?

यौन द्विरूपता एक ही प्रजाति में अलग-अलग लिंग के व्यक्तियों के बीच रूप में व्यवस्थित अंतर है। उदाहरण के लिए, कई स्तनधारियों सहित कुछ प्रजातियों में, नर मादा से बड़ा होता है। दूसरों में, जैसे कि कुछ मकड़ियों में, मादा नर से बड़ी होती है।





नैफिथ्रोमाइसिन



अवलोकन:

भारत के जैव प्रौद्योगिकी क्षेत्र के लिए एक महत्वपूर्ण कदम के रूप में, केंद्रीय मंत्री ने प्रतिरोधी संक्रमणों के लिए प्रथम स्वदेशी एंटीबायोटिक "नैफिथ्रोमाइसिन" को औपचारिक रूप से लांच किया।

नैफिथ्रोमाइसिन के बारे में:

- यह एक एंटीबायोटिक है जिसे " बायोटेक्नोलॉजी इंडस्ट्री रिसर्च असिस्टेंस काउंसिल" (BIRAC) के सहयोग से विकसित किया गया है।
- इसे "मिक्नाफ" व्यापारिक नाम के तहत बाजार में लाया गया है।
- यह देश का पहला स्वदेशी रूप से विकसित एंटीबायोटिक है जिसका उद्देश्य रोगाणुरोधी प्रतिरोध (एएमआर) से निपटना है।
- यह नवाचार सामुदायिक-अधिग्रहित जीवाणुजनित निमोनिया (सीएबीपी) के उपचार के लिए डिज़ाइन किया गया है।
- नैफिथ्रोमाइसिन की प्रभावकारिता इस मायने में उल्लेखनीय है कि यह विशिष्ट और असामान्य दोनों प्रकार के रोगाणुओं को लक्ष्य बनाती है, तथा एक प्रभावशाली समाधान प्रस्तुत करती है, जहां इस वर्ग में कोई भी नया एंटीबायोटिक तीन दशकों से अधिक समय से विश्वभर में विकसित नहीं हुआ है।
- इस एंटीबायोटिक के जठरांत्र संबंधी दुष्प्रभाव न्यूनतम हैं, दवाओं के साथ कोई महत्वपूर्ण पारस्परिक क्रिया नहीं होती है, तथा भोजन से इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ता है, जिससे यह रोगियों के लिए एक बहुमुखी विकल्प बन जाता है।
- यह दवा प्रतिरोधी निमोनिया से लड़ने के लिए सिर्फ 3 खुराक के साथ 10 गुना प्रभावकारिता प्रदान करता है।
- नैफिथ्रोमाइसिन का विकास 14 वर्षों के समर्पित अनुसंधान और 500 करोड़ रुपये के निवेश का परिणाम है, जिसके नैदानिक परीक्षण अमेरिका, यूरोप और भारत में किए गए हैं।

सामुदायिक-अधिग्रहित जीवाणुजनित निमोनिया के बारे में मुख्य तथ्य

- यह सबसे आम संक्रामक रोगों में से एक है तथा विश्व भर में मृत्यु दर और रुग्णता का एक महत्वपूर्ण कारण है।



- सीएपी उत्पन्न करने वाले विशिष्ट जीवाणुजनित रोगजनकों में स्ट्रेप्टोकोकस न्यूमोनिया, हेमोफिलस इन्फ्लुएंजा और मोराक्सेला कैटरलिस शामिल हैं।

प्रश्न 1: जैव प्रौद्योगिकी क्या है?

यह जीवित जीवों या उनके अंगों का अनुप्रयोग है, जिससे तकनीकी प्रगति होती है और उन तकनीकों का विभिन्न क्षेत्रों में उपयोग होता है। जैव प्रौद्योगिकी का आधुनिक युग डीएनए संरचना की खोज के साथ-साथ आनुवंशिक इंजीनियरिंग तकनीकों और पॉलीमरेज़ चेन रिएक्शन के विकास के साथ शुरू हुआ।





संपीडित बायोगैस



अवलोकन:

मध्य प्रदेश के ग्वालियर में अत्याधुनिक संपीडित बायोगैस (सीबीजी) संयंत्र के साथ भारत की पहली आधुनिक, आत्मनिर्भर गौशाला का शुभारंभ किया गया।

संपीडित बायोगैस के बारे में

- यह हाइड्रोकार्बन गैसों और वाष्पों का मिश्रण है जिसमें मुख्य रूप से गैसीय रूप में **मीथेन** मौजूद होता है।
- इसे पशु और पौधे के अपशिष्ट के अपघटन द्वारा उत्पादित किया गया है, इसे ऑटोमोटिव ईंधन और औद्योगिक अनुप्रयोग के रूप में उपयोग के लिए शुद्ध और संपीडित किया गया है;
- सीबीजी का कैलोरी मान और अन्य गुण सीएनजी के समान हैं और इसलिए इसका उपयोग हरित नवीकरणीय ऑटोमोटिव ईंधन के रूप में किया जा सकता है।
- इस प्रकार, देश में बायोमास की प्रचुर उपलब्धता को देखते हुए, यह ऑटोमोटिव, औद्योगिक और वाणिज्यिक क्षेत्रों में सीएनजी का स्थान ले सकता है।
- कृषि अवशेषों, मवेशियों के गोबर और नगरपालिका के ठोस अपशिष्ट (एमएसडब्ल्यू) को व्यावसायिक स्तर पर सीबीजी में परिवर्तित करने से निम्नलिखित लाभ होने की उम्मीद है
 - **प्राकृतिक गैस** और कच्चे तेल के आयात में कमी।
 - सीबीजी के उत्पादन के लिए कृषि अवशेष, मवेशियों के गोबर और एमएसडब्ल्यू का उपयोग करना और इस प्रकार **उत्सर्जन और प्रदूषण में कमी लाना।**
 - जलवायु परिवर्तन लक्ष्यों को प्राप्त करने में राष्ट्रीय प्रतिबद्धताओं की पूर्ति की दिशा में एक बढ़ावा।
 - ऊर्जा सुरक्षा चिंताओं और कच्चे तेल/गैस की कीमतों में उतार-चढ़ाव के विरुद्ध सुरक्षा प्रदान करना।
 - जिम्मेदार अपशिष्ट के माध्यम से स्वच्छ भारत मिशन में योगदान
 - प्रबंध
 - प्रदूषण और कार्बन उत्सर्जन को कम करना।
 - **किसानों को राजस्व का अतिरिक्त स्रोत उपलब्ध कराना**, ग्रामीण रोजगार और ग्रामीण अर्थव्यवस्था में सुधार लाना



प्रश्न 1: प्राकृतिक गैस क्या है?

यह गैसों का मिश्रण है जिसमें हाइड्रोकार्बन प्रचुर मात्रा में होते हैं। यह रंगहीन और गंधहीन गैस है जो 70-90% मीथेन (CH₄) से बनी होती है। इसके अन्य अवयवों में इथेन (C₂ H₆) और प्रोपेन (C₃ H₈) शामिल हैं।





चागास रोग क्या है?



अवलोकन:

एक हालिया अध्ययन से पता चलता है कि ट्रिपैनोसोमा क्रूज़ी - वह परजीवी जो चागास रोग का कारण बनता है - मृत किसिंग बग्स (ट्रायटोमिनाई) में भी जीवित रह सकता है, यहां तक कि कीटनाशक उपचारित कुत्ते के घरों में भी।

चागास रोग के बारे में:

- चागास (CHAH-gus) रोग एक सूजनकारी, संक्रामक रोग है जो प्रोटोजोआ परजीवी, ट्रिपैनोसोमा क्रूज़ी के कारण होता है।
 - यह परजीवी ट्रायटोमाइन (रेडुविड) बग के मल में पाया जाता है।
 - इस बग को "किसिंग बग" के नाम से भी जाना जाता है।
- चागास रोग दक्षिण अमेरिका, मध्य अमेरिका और मैक्सिको में आम है, जो ट्रायटोमाइन बग का मुख्य निवास स्थान है।
- अमेरिकन ट्रिपैनोसोमियासिस के नाम से भी जाना जाने वाला चागास रोग किसी को भी संक्रमित कर सकता है। अगर इसका इलाज न किया जाए तो बाद में यह गंभीर हृदय और पाचन संबंधी समस्याएं पैदा कर सकता है।
- इलाज :
 - संक्रमण के तीव्र चरण के दौरान, चागास रोग का उपचार परजीवी को मारने पर केंद्रित होता है।
 - जिन लोगों को क्रॉनिक चागास रोग है, उनमें परजीवी को मारना अब संभव नहीं है। इस बाद के चरण में उपचार संकेतों और लक्षणों को प्रबंधित करने के बारे में है।

प्रश्न 1 : प्रोटोजोआ क्या हैं?

प्रोटोजोआ एकल कोशिका वाले जीव हैं जिनमें झिल्ली से बंधा हुआ नाभिक होता है। अधिकांश प्रोटोजोआ स्वतंत्र रूप से रहते हैं, लेकिन कुछ परजीवी होते हैं। वे विषमपोषी हैं, जिसका अर्थ है कि वे ऊर्जा और पोषक तत्वों के लिए अन्य पौधों या जानवरों को खाते हैं। वे कई अलग-अलग आकार और आकारों में आते हैं, जिसमें अमीबा से लेकर पैरामीशियम तक शामिल है जो अपने निश्चित आकार और जटिल संरचना के साथ अपना आकार बदल सकता है।



दिबांग बहुउद्देशीय परियोजना



अवलोकन:

केंद्रीय उपभोक्ता मामले, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण राज्य मंत्री ने हाल ही में लोअर दिबांग घाटी जिले के अपने दो दिवसीय दौरे के तहत अरुणाचल प्रदेश के उंबुक गांव में दिबांग बहुउद्देशीय जल विद्युत परियोजना स्थल का दौरा किया।

दिबांग बहुउद्देशीय जल विद्युत परियोजना के बारे में:

- यह एक बाढ़ नियंत्रण सह जलविद्युत परियोजना है जिसे अरुणाचल प्रदेश में ब्रह्मपुत्र नदी की सहायक नदी दिबांग नदी पर विकसित करने की योजना है।
- 2,880 मेगावाट की स्थापित क्षमता के साथ यह देश की सबसे बड़ी जलविद्युत सुविधा होगी।
- इसका विकास भारत की सरकारी कम्पनी राष्ट्रीय जलविद्युत निगम (एनएचपीसी) द्वारा किया जा रहा है।
- इस परियोजना को ऊर्जा भंडारण परियोजना के रूप में डिजाइन किया गया है, जिसमें विद्युत उत्पादन के अलावा बाढ़ नियंत्रण भी एक प्रमुख उद्देश्य है।
- परियोजना की विशेषताएं :
 - इस परियोजना में 278 मीटर ऊंचे और 375 मीटर लंबे कंक्रीट ग्रेविटी बांध का निर्माण किया जाना है, जो भारत का सबसे ऊंचा कंक्रीट-ग्रेविटी बांध होगा।
 - बांध का निर्माण रोलर कॉम्पैक्टेड कंक्रीट (आरसीसी) तकनीक से किए जाने की योजना है और यह विश्व का सबसे ऊंचा आरसीसी बांध होगा।
 - इस बांध से 43 किलोमीटर लम्बा जलाशय निर्मित होगा जिसकी सकल भंडारण क्षमता 3.85 बिलियन क्यूबिक मीटर होगी।
 - इसमें 9 मीटर व्यास वाली 300 मीटर से 600 मीटर लम्बी छह घोड़े की नाल के आकार की हेड रेस सुरंगें, एक भूमिगत पावर हाउस, तथा 9 मीटर व्यास वाली 320 मीटर से 470 मीटर लम्बी छह घोड़े की नाल के आकार की टेल रेस सुरंगें शामिल हैं।

प्रश्न 1 : गुरुत्वाकर्षण बांध क्या है?

गुरुत्वाकर्षण बांध एक प्रकार की बांध संरचना है जिसे मुख्य रूप से गुरुत्वाकर्षण बल का विरोध करने और पानी या अन्य सामग्रियों को रोकने के लिए डिज़ाइन किया गया है। यह पानी या अन्य सामग्रियों द्वारा लगाए गए क्षैतिज दबाव का प्रतिकार करने के लिए अपने स्वयं के वजन और द्रव्यमान पर निर्भर करता है। गुरुत्वाकर्षण बांध सबसे पुराने और सबसे आम प्रकार के बांधों में से हैं जिनका उपयोग जल आपूर्ति, सिंचाई, बाढ़ नियंत्रण और जलविद्युत उत्पादन सहित विभिन्न उद्देश्यों के लिए किया जाता है।